MAA OMWATI INTERNATIONAL

EDUCATION CITY

V.P.O. Hassanpur, Teh. Hodal Distt. Palwal

(HR.)

NOTES

BA 3RD SEM

Sub:- AN INTRODUCTION ARCHAEOLOGY

UNIT-1

प्रश्न-1 पुरातत्व की परिभाषा, अर्थ और क्षेत्र पर विस्तृत नोट लिखें।

उत्तर पुरातत्व मानव सभ्यता और संस्कृति का अध्ययन है। जो भौतिक अवशेषों जैसे उपकरण, इमारतें और जीवाश्मों का उपयोग करके प्राचीन मानव अतीत के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। यह एक वैज्ञानिक अनुशासन है, जो हमें अतीत के लोगों के रहने के तरीके और उनकी संस्कृति और वर्तमान को समझने में मदद करता है। पुरातत्वविद, खुदाई, वैज्ञानिक विश्लेषण और पुरातात्विक साक्ष्यों का अध्ययन करके मानव इतिहास को समझने और पुनर्निर्माण करने का प्रयास करते हैं। खासकर उन समाजों के लिए जिनके कोई लिखित अभिलेख नहीं हैं।

पुरातत्व क्या है। → • पुरातत्व विज्ञान है जो उन भौतिक वस्तुओं का अध्ययन करता है। जो मनुष्य द्वारा छोड़ी गई हैं।

यह मानव के प्राचीन और हाल के अतीत का भौतिक अवशेषों के माध्यम से अध्ययन करता है।

इस का उद्देश्य मानव संस्कृति और व्यवहार को समझना है।

पुरातत्व मानव संस्कृति के भौतिक अवशेषों के अध्ययन को कहते है। जिसमे उत्खनन से मिली कलाकृतियाँ स्मारक, और सांस्कृतिक परिदृश्य शामिल होते है। और यह अतीत और मानव व्यवहार को समझने मे मदद करता है।

अर्थ :- पुरातत्व शब्द का अर्थ है प्राचीन वस्तुए (पुरा - प्राचीन + तत्व = वस्तु) यह मानव अतीत के भौतिक अवशेषों का अध्ययन है जिससे मानव समाज की गहरी समझ प्राप्त होती है।

अध्ययन का विषय :- इसमे वे वस्तुए भवन, उपकरण, सिक्के और अन्य सामग्री शामिल होती है। जो मनुष्य द्वारा बनाई या उपयोग की गई थी। और अब भी मौजूद है।

पुरातत्व का क्षेत्र :- पुरातत्व का क्षेत्र अतीत के अध्ययन से जुड़ा है। जिसमे मानव गतिविधियो के भौतिक अवशेषों (जैसे कलाकृतियाँ, इमारते, औजार का व्यवस्थित उत्खनन, विश्लेषण और व्याख्या की जाती है। ताकि अतीत की संस्कृतियो के पर्यावरण को समझा जा सके। यह एक बहुआयामी विषय है। जो मानविकी और विज्ञान दोनो से जुड़ा है। जिसमे प्रागैतिहासिक (लिखित रिकॉर्ड

के बिना) और ऐतिहासिक (लिखित रिकॉर्ड के साथ) काल की सभ्यताओं का अध्ययन शामिल है।

भौतिक संस्कृति का अध्ययन :-
पुरातत्व मुख्य रूप से मनुष्यों द्वारा छोड़ी गई भौतिक वस्तुओं, जैसे कला-कृतियों, औजार, वस्तु कला, और सांस्कृतिक परिदृश्यों का विश्लेषण करता

अतीत और पुनर्प्राप्ति की व्याख्या :-
इसका उद्देश्य अतीत से से भौतिक साक्ष्य को खोजना और उस का वैज्ञानिक विश्लेषण करना है।

पुरातत्व की परिभाषा :-
पुरातत्व मानव इतिहास का एक वैज्ञानिक अध्ययन है। जो प्राचीन लोगों और उन की संस्कृतियों को समझने के लिए खुदाई से प्राप्त भौतिक अवशेषों, जैसे की कलाकृतियां, स्मारकों औजारों और शिलालेखों का विश्लेषण करता है। यह मानव-विज्ञान का एक उपक्षेत्र है, और इस का उद्देश्य भौतिक साक्ष्यों के आधार पर अतीत के बारे में व्याख्या विकसित करते है। मानव व्यवहार को समझना और अतीत की सीख लेकर भविष्य को बेहतर बनाता है।

प्रश्न-२ पुरातत्व के अनुशासन, संबंध और शुद्ध विज्ञान पर नोट लिखो।

उत्तर पुरातत्व मानव जाति के भौतिक अवशेषों का अध्ययन है। जिसमें सर्वेक्षण उत्खनन और विश्लेषण के माध्यम से अतीत की सभ्यताओं और संस्कृतियों को समझा जाता है। यह एक बहु-विषयक क्षेत्र है। जो भौतिक विज्ञान, रासायन विज्ञान, भू-विज्ञान, मानव विज्ञान, निर्वंशविज्ञान जैसे विज्ञानों की तकनीकों और सिद्धांतों का उपयोग करता है। जिससे यह एक शुद्ध विज्ञान के रूप में भी कार्य करता है। जबकि अतीत के मानव अनुभव के अध्ययन के रूप में इसे एक मानवतावादी अनुशासन भी माना जाता है।

पुरातत्व : अनुशासन और संबंध →

★ मानव अतीत का अध्ययन :-

पुरातत्व, मानव इतिहास का भौतिक अवशेषों के माध्यम से अध्ययन है। जो विभिन्न विज्ञानों और मानविकी के साथ संबंध रखता है। और यह समझने की कोशिश करता है। की अतीत

के समाज कैसे बने। पुरातत्व से वैज्ञानिक विधियों का उपयोग होता है।

पुरातत्व उन भौतिक अवशेषों का अध्ययन करता है, जो मनुष्य द्वारा छोड़े गए हैं। जैसे की लाखों साल पुराने जीवाश्मम और पत्थर के औजार से लेकर आधुनिक समय के कचरे तक

पुरातत्व का अनुशासन :-

- परिभाषा :- पुरातत्व हमारे मानव अतीत का भौतिक अवशेषों (जैसे पत्थर के औजार कलाकृतियां, कचरा) के माध्यम से अध्ययन है।

- दायरा :- यह लाखों साल पहले के पाषाण काल से लेकर हाल के दशकों तक का अध्ययन कर सकता है।

- उद्देश्य :- अतीत के समाजों और पर्यावरणों के बारे में जानना, लिखित अभिलेखों में छूटी हुई जानकारी को उजागर करना और संस्कृति उजागर को समझना इसका मुख्य उद्देश्य है

पुरातत्व का संबंध :- पुरातत्व का

इतिहास, भौतिक, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, और अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ है, क्योंकी ये सभी प्राचीन मानव की गतिविधियों से जुड़ा हुआ है।

पुरातत्व का शुद्ध विज्ञान :-

पुरातत्व को शुद्ध विज्ञान या व्यवहारिक विज्ञान दोनों माना जा सकता है। यह भौतिक अवशेषों के माध्यम से मानव अतीत वैज्ञानिक अध्ययन है। जिसमे वैज्ञानिक विधियों का उपयोग किया जाता है।

पुरातत्व का वैज्ञानिक आयाम :-

- **वैज्ञानिक विधियाँ :-** पुरातात्विक मानव गतिविधि से जुड़ी सामग्रियों की संरचना गुणों का वैज्ञानिक विश्लेषण करने के लिए विभिन्न वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करते

- **मानवशास्त्र से जुड़ाव :-** यह मानव शास्त्र का ही एक हिस्सा माना जाता है। जो प्राचीन और

मानव समाजो के अध्ययन से संबंध

- **वर्तमान से संबंधित :-**

पुरातत्व न केवल अतीत का अध्ययन करता है। बल्कि यह वर्तमान की चिन्ताओं के लिए भी महत्वपूर्ण है। क्यों की यह अतीत और भविष्य की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

- **सांस्कृतिक संसाधन प्रबंधन :-**

पुरातत्व का उपयोग सांस्कृतिक संसाधन के प्रबंधन के लिए भी किया जाता है।

- **साक्ष्य आधारित :-**

यह साक्ष्य आधारित विज्ञान है। जहा अतीत की घटनाओ और मानव व्यवहार को समझने के लिए गहन विश्लेषण होता है।

- **प्रगतिशील तकनीके :-**

पुरातत्व मे रेडियोकार्बन डेटिंग, प्राचीन डी एन ए के विश्लेषण तकनीको का उपयोग किया जाता है।

प्रश्न-3 पुरातत्व में सामाजिक विज्ञान पर नोट लिखें।

उत्तर पुरातत्व मानव समाज और उनके व्यवहार को भौतिक अवशेषों के माध्यम से समझने वाला एक सामाजिक विज्ञान है। और यह सामाजिक विज्ञान की शाखा के रूप में या एक स्वतंत्र अनुशासन के रूप में भी वर्गीकृत है। पुरातत्व उन डेटा का अध्ययन करता है। जो इतिहास से पहले के युग से संबंधित होते हैं। और उन तरीकों को विकसित करता है। जो मानव इतिहास को समझने के लिए सामाजिक प्रक्रिया की भूमिका निभाते हैं। पुरातात्विक डेटा का उपयोग आधुनिक समाज को अतीत से जोड़ने के लिए भी किया जाता है जिससे मानव विकास को दीर्घकालीन दृष्टिकोण प्रदान करता है।

पुरातत्व और सामाजिक विज्ञान के बीच संबंध :-

○ मानव अतीत का अध्ययन :-

पुरातत्व लेखन के अविष्कार से पहले मानव अतीत के बारे में

जानकारी का एकमात्र स्त्रोत है। जिस से वह सामाजिक विज्ञानों को मानव अनुभव की पूरी शृंखला तक पहुंच प्रदान करती है।

मानव व्यवहार का अध्ययन :-

पुरातात्विक प्राचीन मानव समाजों और उन के व्यवहार को समझने के लिए भौतिक अवशेषों का विश्लेषण करते हैं।

सामाजिक प्रक्रियाओं की व्याख्या :-

यह सामाजिक संगठन, सामाजिक-राजनीति और मानव एजेंसी के लिए उपयोग होता है।

बहु-विषयक दृष्टिकोण :-

पुरातत्व मानव विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र, और भूगोल जैसे विभिन्न सामाजिक विज्ञानों के साथ निष्कर्षों को जोड़ता है। जिससे यह मानव समाज का समग्र अध्ययन बन जाता है।

साक्ष्य-आधारित :-

पुरातात्विक निष्कर्ष

से प्राप्त डेटा का उपयोग करके अतीत मानव समाजों के विकास और परिवर्तन के बारे निष्कर्ष निकालने के लिए किया जाता है।

पुरातत्व के मुख्य तत्व →

भौतिक अवशेष :-

इनमें उपकरण कलाकृतियाँ, इमारतें, साइटें और परिवर्तनों के बारे में निष्कर्ष शामिल किए जाते हैं।

वैज्ञानिक विश्लेषण :-

आधुनिक पुरातत्व भौतिक अवशेषों का विश्लेषण करने के लिए वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करता है।

सामाजिक-पर्यावरणीय संबंध :-

यह अक्सर मानव परिस्थितिकी गतिकी का अध्ययन करने के लिए पुरातात्विक डेटा को पर्यावरणीय डेटा से जोड़ता है, जो यह समझने में मदद करता है कि मानव प्रकृतिक प्रणालियां समय के साथ कैसे बदलती हैं।

प्रश्न-5 पुरातत्व के निष्कर्ष और उन का महत्व का वर्णन करें।

उत्तर पुरातत्व संबंधि निष्कर्ष हमे मानव के भौतिक और सांस्कृतिक अतीत की समझ प्रदान करते है। जो हमे वर्तमान दुनिया को समझने और भविष्य के लिए सबक सिखाने मे मदद करते है। इन निष्कर्षो का महत्व मानव इतिहास, संस्कृति और तकनीकी विकास को समझने मे है। जिससे हम अपनी सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण कर सके और विभिन्न सांस्कृतियो की विविधता को सराह सके।

पुरातत्व संबंधी निष्कर्षो का महत्व →

मानव इतिहास को समझना :-

पुरातात्विद भौतिक अवशेषो जैसे औजारो, इमारतो और कलाकृतियो का अध्ययन करके मानव के उद्भव से लेकर वर्तमान तक की पूरी यात्रा को समझते है।

सांस्कृतिक विकास को जानना :-

ये निष्कर्ष विभिन्न सांस्कृतियो के

सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की जानकारी देते है। जिस से हम मानवता के जटिल पथ को समझ पाते है।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण :-

पुरातत्व के माध्यम से दबी हुई कहानियो और ऐतहासिक गलत धारणाओ को उजागर किया जा सकता है। जिससे घटनाओ की सही समझ विकसित होती है।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण :-

पुरातात्विक स्थलो और कलाकृतियो का संरक्षण महत्वपूर्ण है। क्योकी वे किसी समुदाय या राष्ट्र की अविनाशी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा होते है। और इन के खोने से उन कहानियो को खोने का खतरा होता है।

आत्म-खोज और स्वयं पुनखोज :-

अतीत की खोज हमे न केवल उस समय के बारे में सिखाती है। बल्कि वर्तमान में हम क्या

है। इसे समझने में भी मदद करता है। जिससे स्वयं की पुनखोज होती है

वैज्ञानिक और तकनीकी विकास :-

पुरातत्व में विभिन्न प्राकृतिक विज्ञानों जैसे रसायन शास्त्र, वनस्पति विज्ञान और जीव विज्ञान का उपयोग भी होता है।

मानवता को एकजुट करना :-

इन निष्कर्षों का उद्देश्य अक्सर मानवता को एकजुट करता है। असमानताओं को दूर करना, और समाज को आगे बढ़ाने के लिए, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना होता है।

निष्कर्ष निकालने की प्रक्रिया →

पुरातात्विक सावधानीपूर्वक उत्खनन सूक्ष्म विश्लेषण और व्याख्या के माध्यम से इन निष्कर्षों को प्राप्त करते हैं। पुरातत्व या पुरातत्वशास्त्र भौतिक संस्कृति की पुनर्प्राप्ति और विश्लेषण के माध्यम से मानव गतिविधि का अध्ययन है।

Page | Date

UNIT = II

प्रश्न-5 पुरातत्व की प्रासंगिकता समकालीन समाज के बारे मे लिखो।

उत्तर पुरातत्व की प्रसांगिकता समकालीन समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकी यह हमे अपने पूर्वजो के जीवन, उनकी सांस्कृतिक सामाजिक संरचनाओं और जलवायु परिवर्तन के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओ को समझने मे मदद करता है। यह वर्तमान की चुनौतियो के लिए अंतदृष्टि प्रदान करता है। जैसे की उदाहरण कृषि सुधार शहरी नियोजन और आधुनिक समाजो के सामने आने वाले पर्यावरणीय मुददो का विश्लेषण।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अंतदृष्टि

मानव इतिहास को समझना :-

पुरातत्व लाखो साल पहले अफ्रीका मे मानव प्रजाति की शुरुआती सदस्यो को लेकर आधुनिक शहरो तक मानव अतीत की व्यापकता को समझने मे मदद करती है।

विलुप्त संस्कृतियो का पुनर्निर्माण :-

विलुप्त संस्कृतियो और उन के जीवन के तरीके को जानने के लिए कलाकृतियो और स्थलो का अध्ययन किया जाता है। जिस से हमे सस्कृतिक परिवर्तनो को समझने मे मदद मिलती है।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण :-

पुरातत्व मानव प्रजाति द्वारा बनाई गई बहुआयामी सास्कृतिक विरासत को समझने और बनाए रखने का एक साधन है।

कृषि का विकास :-

ग्रामिण क्षेत्रो के पुरातात्विक अध्ययनो से किसानो को अपनी फसलो की उपज बढाने और कृषि के टिकाऊ तरीके खोजने मे मदद मिलती है।

अतीत का अध्ययन और समझ :-

पुरातत्व हमे मानव इतिहास की व्यापकता और विविधता को समझने मे मदद करता है। यह प्राचीन

सभ्यताओ की रहन-सहन, सामाजिक जीवन प्रौद्योगिकी और कलाकृतियों का अध्ययन करके हमे यह बताता है कि मनुष्य ने समय के साथ कैसे विकास किया है।

सामाजिक न्याय का बढ़ावा :-

पुरातत्वविद उपनिवेशवाद और उत्पीड़न की विरासतो का सामना करने के लिए स्थानीय समुदाय के साथ साझेदारी करके सामाजिक न्याय को बढ़ावा देते है।

पहचान और विरासत का बोध :-

- पुरातत्व अतीत की छवियो का निर्माण करता है। और बताता है की लोग अतीत से कैसे जुड़ते है उसका उपयोग कैसे करते है। और उस का अनुभव कैसे करते है।

- यह अतीत की आधुनिक समय की आवश्यकताओ के लिए उपयोग करने मे मदद करता है। जिससे समकालीन समाज मे उस की प्रासंगिकता बनी रहती है।

प्रश्न-6 पुरातत्व के प्रमुख अनुशासन नए पुरातत्व और पोस्ट प्रक्रियात्मक पुरातत्व के बारे में लिखें।

उत्तर इस संदर्भ में किसी अनुशासन के माप उसके मूल सैद्धांतिक और पद्धतिगत दृष्टिकोण को संदर्भित करते हैं।

नवीन पुरातत्व या प्रक्रियात्मक :-

प्रक्रियावाद की प्रतिक्रिया के रूप में उभरा जिसमें विविध सिद्धांतों जैसे संरचनावाद को शामिल करके इनकी वस्तुपरकता पर फोकस किया

इन्होंने वैज्ञानिक व्यवस्थित दृष्टिकोण पर जोर दिया। जिसमें परिकल्पनाओं का परिक्षण करने और मानव व्यवहार तथा सांस्कृतिक परिवर्तन के नियमों की पहचान करने के लिए मात्रात्मक तरीकों का उपयोग किया

नवीन पुरातत्व / प्रक्रियात्मक पुरातत्व

लगभग 1960-1970 के दशक :-

केन्द्र :- वैज्ञानिक और व्यवस्थित

जांच के माध्यम से सांस्कृतिक प्रक्रियाओं, मानव व्यवहार और उनके सांस्कृतिक परिवर्तनों की व्याख्या करना।

कार्यप्रणाली :-

परिकल्पनाओं का परीक्षण करने और मानव व्यवहार के सामान्य नियमों को स्थापित करने के लिए मात्रात्मक विधियों, सांख्यिकी, प्रणाली सिद्धांत और एक परिकल्पना निगमात्मक मॉडल का उपयोग किया गया है।

उद्देश्य :-

अतीत के मानव समाजों का पुनर्निर्माण करना तथा मानव शास्त्रीय प्रश्नों का उत्तर देना। सांस्कृतिक के अध्ययन को एक तार्किक आयाम प्रदान करता है।

अंतर्निहित दर्शन :-

प्रत्यक्षवाद यह विश्वास करना है कि भौतिक अभिलेखों को वस्तुनिष्ठ अध्ययन के माध्यम से अतीत को जाना जा सकता है।

प्रमुख विचार :-

मानव पारिस्थितिकी संस्कृति और पर्यावरण के बीच अंतः क्रिया, तथा परिवर्तनशील और बसावट के पैटर्न को समझने के महत्व पर जोर दिया गया है।

उत्तर-प्रक्रियात्मक पुरातत्व 1970 के दशक के बाद :-

केन्द्र :-

व्याख्या की व्यक्तिपरक प्रकृति, मानव एजेंसी, तथा अतीत के समाजों में विचारधारा और प्रतिकवाद का महत्व।

कार्यप्रणाली :-

भौतिक अवशेषों की व्याख्या करने के लिए संरचनावाद, व्याख्यावाद और उत्तर आधुनिकवाद, जैसे विविध सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को शामिल किया गया

लक्ष्य :-

समाज के भौतिक और आदिम पहलुओं तथा मानवीय क्रियाकलापों के व्यक्तिगत और प्रतिकात्मक आयामों पर विचार करते हुए।

Page 99

प्रश्न-7 पुरातत्व के सिद्धांत और तरीके की व्याख्या करे।

उत्तर पुरातत्व के मुख्य सिद्धांत स्तरीकरण का नियम है। जिसके अनुसार किसी स्थल की निचली परते ऊपरी परतो से पुरानी होती है। पुरातात्विक कलाकृतियो का पता लगाने और उन का विश्लेषण करने के लिए उत्खनन (खुदाई), सर्वेक्षण (हवाई और उपग्रह फोटोग्राफी, जमीनी सर्वेक्षण), और प्रयोगशाला विश्लेषण (रेडियोकार्बन डेटिंग) जैसी विधियो का उपयोग करते है। इस के अतिरिक्त विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोण जैसे प्रक्रियात्मक, उत्तर-प्रक्रियात्मक और मार्क्सवादी पुरातत्व पर निर्भर करते है। कि पुरातात्विक डेटा की व्याख्या कैसे की जाती है

पुरातत्व के मुख्य सिद्धांत :-

स्तरीकरण का नियम :-

यह सिद्धांत बताता है। कि किसी पुरातात्विक स्थल पर मौजूद भू वैज्ञानिक परते समय के साथ क्रमिक रूप से जमा होती है।

सबसे निचली परत सबसे पुरानी होती है। और सबसे ऊपर की परत सबसे नई होती है।

साक्ष्य की व्याख्या :-

पुरातत्वविद् कलाकृतियों और अन्य अवशेषों को के संदर्भ में बनाए रखता है। क्योंकि उनके संदर्भ उनकी व्याख्या के लिए महत्वपूर्ण है।

पुरातत्व के मुख्य तरीके :-

अन्वेषण और सर्वेक्षण :-

इसमें हवाई फोटोग्राफी, उपग्रह इमेजरी और जमीनी सर्वेक्षण का उपयोग पुरातात्विक स्थलों का पता लगाना शामिल है।

उत्खनन (खुदाई) :-

यह पुरातात्विक अवशेषों को उजागर करने के लिए जमीन की सावधानीपूर्वक करने की एक प्रक्रिया है। जिसमें अवशेषों के संदर्भ को संरक्षित करने पर जोर दिया जाता है।

प्रयोगशाला विश्लेषण :-

इसमें कलाकृतियों का अध्ययन करने के लिए रेडियोकार्बन डेटिंग जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। जिससे उन की आयु का उपयोग किया जाता है। जिससे उन की आयु को मूल ना निर्धारित किया जा सके।

भूभौतिकीय सर्वेक्षण :-

ग्राउंड पेनेट्रेटिंग रडार (GPR) जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। नीचे दबी हुई वास्तुशिल्प विशेषताओं को खोजने के लिए किया जाता है। जिससे बड़े क्षेत्रों को कवर किया जा सकता है।

पुरातत्व के विभिन्न सिद्धांत :-

पुरातात्विद अपने शोध में अलग-अलग सिद्धांतों का पालन करते हैं। जिनमें शामिल है।

प्रक्रियात्मक पुरातत्व :-

यह सिद्धांत मानता है। की वैज्ञानिक विधि का उपयोग करके पिछले समाजों के बारे में सटीक और

वस्तुनिष्ठ ज्ञान प्राप्त किया जा सकता

उत्तर - प्रक्रियात्मक पुरातत्व :-

यह मानता है । की वैज्ञानिक विधि का उपयोग करके । पुरातात्विक डेटा मानवीय व्याख्या और सामाजिक कारको से प्रभावित होता है ।

मार्क्सवादी पुरातत्व :-

यह समाज के संचालन और विकास को समझने के लिए पुरातात्विक साक्ष्य की व्याख्या एक विशेष ढांचे के भीतर करता है ।

प्रश्न-8 अन्वेषण के तरीके पुरातत्व के बारे में लिखे ।

उत्तर पुरातात्विक अन्वेषण मे व्यापक खुदाई के बिना संभावित स्थलो का पता लगाने और उन का दस्तावेजीकरण करने के लिए क्षेत्र सर्वेक्षण, सुदूर संवेदन (हवाई फोटोग्राफी, LiDAR, GPR, भू भौतिकीय सर्वेक्षण, परीक्षण पिटिंग और डेस्कटॉप अध्ययन जैसी विधियो का उपयोग किया जाता है । ये तकनीके प्रारम्भिक आंकड़े एकत्र करती है ।

अधिक गहन उत्खनन के लिए रूचि के क्षेत्रों की पहचान करती है तथा पुरातात्विक निष्कर्षों के संदर्भ और महत्व समझने में सहायता करती है तथा

यहां सामान्य अन्वेषण विधियों का विवरण दिया गया है।

सतह सर्वेक्षण :-

फील्ड वॉकिंग (या वॉकओवर सर्वेक्षण)

पुरातत्वविद व्यवस्थित रूप से भूदृश्य पर चलते हैं। ताकि वे जमीन की सतह पर कलाकृतियों और विशेषताओं को पहचान सके और अभिलेखन कर सके।

डेस्कटॉप अध्ययन :- इसमें ऐतिहासिक अभिलेख। मानचित्र और मौजूदा साहित्य की समीक्षा करना शामिल है। ताकि पिछले शोध और वास्तविक साक्ष्यों के आधार पर संभावित स्थलों की पहचान की जा सके।

रिमोट सेंसिंग :-

हवाई फोटोग्राफी :-

यह किसी स्थल का विहंगम दृश्य प्रदान करता है। जिससे फसल के निशान और मिट्टी के निशान छाया की पहचान करने में मदद मिलती है। जो दबी हुई संरचनाओं को प्रकट करते हैं।

लिडार :- लेजर प्रौद्योगिकी का उपयोग कर भूमि की सतह के विस्तृत त्रि-आयामी मानचित्र तैयार किए जाते हैं। जिससे सुक्ष्म स्थूला कृतिक विशेषता उजागर होती है। जो पुरातात्विक स्थलों का संकेत दे जाती है।

भू-भेदक रडार (जीपी आर) :-

एक आक्रामक विधि जो खुदाई के बिना विसंगतियों और उपसतह विशे-षताओं का पता लगाने के लिए रडार का उपयोग करती है।

भूभौतिकीय सर्वेक्षण :-

मैग्नेटोमेट्री :-

यह पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र में पुरा तात्विक विशेषताओं जैसे जले हुए पौधों या चुल्हों के कारण होने वाले परिवर्तनों का पता लगाना है।

विद्युत प्रतिरोधकता सर्वेक्षण :-

घनत्व और नमी की मात्रा भिन्नता वाली दबी हुई संरचनाओं की पहचान करने के लिए मिट्टी की विद्युत चालकता को मापता है।

अन्य विधियाँ

परीक्षण पिटिंग :-

किसी स्थल की क्षमता और उस के भूमिगत निक्षेपों की प्रकृति का आकलन करने के लिए विभिन्न स्थानों पर छोटे उथले गड्ढे खोदे जाते हैं।

भौगोलिक सूचना प्रणाली :-

पुरातात्विक स्थलों से जुड़ा डेटा को प्राप्त करने, संगृहीत करने विश्लेषण करने और प्रबंधित करने के लिए उपयोग की जाने वाली एक तकनीक है।

Page
Date

UNIT=III

प्रश्न-1 पुरातत्व मे उत्खनन के तरीको को बारे मे लिखे।

उत्तर पुरातात्विक उत्खनन मे विभिन्न विधिया शामिल होती है। जैसे ग्रिड प्रणाली खुले क्षेत्र मे उत्खनन तथा व्यवस्थित रूप से अवशेषो को उजागर करने तथा उन का दस्तावेजीकरण करने के लिए खाई खोदना। जिसका लक्ष्य संदर्भ के अनुसार कलाकृतियो और साक्ष्यो को प्राप्त करना होता है। प्रमुख तकनीको मे छोटे औजारो जैसे की ट्रॉवेल और ब्रुश का उपयोग करना। खोजो को विस्तृत नोट्स और तस्वीरो मे सावधानिपूर्वक दर्ज करना, तथा छोटी कलाकृतियो को प्राप्त करने के लिए मिट्टी की जाच शामिल है। विधि का चयन स्थल और विशिष्ट शोध प्रश्नो, तथा विशेषताओ और कलाकृतियो और उदाहरण (परतो का स्तरीकरण) और क्षैतिज संबंधो को समझने की आवश्यकता पर निर्भर करता है।

सामान्य उत्खनन विधियाँ :-

ग्रिड सिस्टम (व्हीलर बॉक्स-ग्रीड):-

स्थल को वर्गों मे विभाजित किया गया है। तथा मिट्टी की परतो (स्तरो) को ऊर्ध्वाधिर रूप रेखा प्रदान करने के लिए बाउलकस नामक विभाजन छोड़े गए है। इस मे साइट के ऊर्ध्वाधिर इतिहास का विस्तृत स्तरीकृत विश्लेषण और रिकॉर्डिंग संभव हो जाती है।

खुले क्षेत्र मे उत्खनन :-

किसी स्थल के बड़े क्षेत्र की खुदाई की जाती है। जिस से स्थल की क्षैतिज संरचना तथा ऊर्ध्वाधिर स्तर-आकृति दोनो का पता चलता है। यह विभिन्न सरचनाओं और कलाकृतियों के बीच संबंधो का अध्ययन करने के लिए उत्कृष्ट है।

खाई-खुदाई :-

भू-स्तरीकरण को प्रकट करने तथा स्थल की गहराई और क्षैतिज विस्तार को परिभाषित करने के लिए अक्सर प्रारंभ मे भारी मशीनरी की सहाय से लंबी खाई खोदी जाती है।

Scanned with OKEN Scanner

परीक्षण गड्ढे :-

बड़ी खुदाई शुरू होने से पहले त्वरित आंकड़े जुटाने और पुरातात्विक जमाव की गहराई और प्रकृति का निर्धारण करने के लिए छोटी खुदाई की गई।

प्रमुख तकनीकें और उपकरण :-

स्ट्रेटीग्राफिक उत्खनन :-

स्थल की कालानुक्रमिक इतिहास और खोजने के संदर्भ को समझने के लिए उन के मूल क्रम में परतों में खुदाई करने का मूल सिद्धांत है।

औजार :-

पुरातात्विद सावधानिपूर्वक खुरचने के लिए कुदाल, ढीली मिट्टी हटाने के लिए ब्रश, नाजुक वस्तुओं को खरोंचने के लिए लकड़ी की कटार का उपयोग किया जाता है।

दस्तावेजीकरण :-

उत्खनन में प्रत्येक पहलू जिस में विशेषताएं मिट्टी में परिवर्तन और कलाकृतियों का स्थान शामिल है।

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न-10 पुरातत्व के पिछले उत्खनन के विश्लेषण के बारे में लिखें।

उत्तर पिछले उत्खनन विश्लेषण या उत्खनन के बाद का विश्लेषण पुरातात्विक खुदाई के बाद का महत्वपूर्ण चरण है जहां विशेषज्ञ उत्खनन के दौरान एकत्रित कलाकृतियों, पर्यावरणीय नमूनों और प्रासंगिक डेटा का संसाधित विश्लेषण और व्याख्या करते हैं। इस प्रक्रिया में मिट्टी के बर्तनों पत्थर के औजार और हड्डियों जैसे सामग्रीयों की सफाई, वर्गीकरण और सूचीकरण शामिल है। अक्सर विशेष वैज्ञानिक काल निर्धारण और विश्लेषण तकनीकों के साथ। इस का लक्ष्य कच्चे डेटा को ज्ञान में सुसंगत निकाय में बदलना।

उत्खनन पश्चात विश्लेषण के चरण

डेटा समेकन और संगठन :-

पहले चरण में उत्खनन से प्राप्त योजनाओं, रेखाचित्रों, तस्वीरों और लिखित नोटों सहित सभी

अभिलेखों को संकलित और व्यवस्थित करना शामिल है।

प्रसंस्करण और सफाई :-

प्राप्त वस्तुओं को साफ किया जाता है। सामग्री जैसे की (सिरेमिक, धातु, पत्थर) के आधार पर छांटा जाता है। तथा आगे के विश्लेषण या संरक्षण को तैयार किया जाता है।

विशेषज्ञ विश्लेषण :-

खोजों और नमूनों को गहन अध्ययन के लिए विशेषज्ञों के पास भेजा जाता है।

कलाकृति विश्लेषण :-

विशेषज्ञ मिट्टी के बर्तनों और औजारों जैसी वस्तुओं की सामग्री, उत्पत्ति, विनिर्माण और कार्य की पहचान करते हैं।

पर्यावरण विश्लेषण :-

पुरातत्व - प्राणी विज्ञानी आहार के लिए पशुओं की हड्डीयों का अध्ययन करते

जैव पुरातत्व :-

पुरातत्वविज्ञानियों द्वारा मानव अवशेषों के विश्लेषण से जनसांख्यिकी जानकारी मिलती है।

वैज्ञानिक डेटिंग :- रेडियो कार्बन और डेंड्रोक्रोनोलॉजी जैसी तकनीक का उपयोग साइट के कालक्रम को स्थापित करने के लिए किया जाता है

व्याख्या और विश्लेषण :- सभी विशेषज्ञ विश्लेषणों के परिणामों को साइट के इतिहास, गतिविधियों, निवासियों और अन्य क्षेत्रों से संबंधों की व्याख्या करने के लिए एकत्रित किया जाता है।

रिपोर्टिंग और संग्रहण :- एक विस्तृत अंतिम रिपोर्ट संकलित की जाती है और उसे प्राधिकारियों एवं संग्रहालयों को प्रस्तुत किया जाता है

अतीत को समझना :- यह कच्चे आँकड़ों को एक क्रम में बदल देता है तथा यह बताता है।

प्रश्न-11 भारतीय पुरातत्व इतिहास के बारे मे लिखे ।

उत्तर भारतीय पुरातत्व का इतिहास 17वी और 18वी शताब्दी मे यूरोपीय यात्रियो और पुरातात्विदो के साथ शुरू हुआ । जिसके परिणाम स्वरूप एसियाटिक सोसाइटी जैसी संस्थाओ का गठन हुआ और 1861 मे सर अलेक्जेंडर कनिंघम के नेतृत्व मे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ए एस आई) की स्थापना हुई एक प्रमुख मोड 1901 मे लॉर्ड कर्जन द्वारा सर जॉन मार्शल को महा-निदेश नियुक्त करना था । जिसने ए एस आई का आधुनिकरण किया और प्रमुख पुरातात्विक स्थलो की पहचान और अन्वेषण तथा तत्पश्चात भारत की विरासत के संरक्षण और सुरक्षा को बढावा दिया है।

प्रारंभिक अन्वेषण और नीव (16वी-18वी शताब्दी) :-

यात्री और पुरातत्ववेत्ता :-

प्रारंभिक गतिविधिया यूरोपीय यात्री और विद्वानो द्वारा संचालित की गई है। जिन्होने प्राचीन स्मारको और धार्मिक

स्थलो का दस्तावेजीकरण किया है।

एसियाटिक रिसचेस :-

सर विलियम जोनस् द्वारा 1784 मे स्थापित एशियाटिक सोसाइटी ने 1778 मे एशियाटिक रिसचेस् प्रकासित करना शुरू किया। जिसने भारत की ऐत-हासिक और पुरातात्विद संरचना को प्रकासित करना शुरू किया जिसने भारत की ऐतहासिक और पुरातात्विद संरचना को प्रकास मे लाया।

सोसाइटियो की स्थापना :-

इसी प्रकार की समितियो की स्थापना बम्बई (1804) और मद्रास (1818) मे भी की गई। जिससे इन पुरा-तात्विदो की रुचि का दायरा बढ गया।

व्यवस्थित अध्ययन और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (19 वी शताब्दी)

सर अलेक्जेडर कनिघंम :-

कनिंघम, जिन्हे प्रथम पुरातत्व सर्वेक्षक नियुक्त किया गया था। ने 1861 में ए एस आई की स्थापना की जिसका उद्देश्य महत्वपूर्ण प्राचीन अवशेषो का दस्तावेजीकरण और वर्णन करना था।

सर्वेक्षणों पर ध्यान केंद्रित करे :-

ए एस आई के प्रारम्भिक कार्य मे स्थलो का सर्वेक्षण शामिल था। जिससे स्मारको और पुरावशेषो की पहचान हो सकी।

आधुनिकीकरण और प्रमुख खोजे :-

लॉर्ड कर्जन के सुधार :-

लॉर्ड कर्जन के शासनकाल मे इस संगठन को पुनर्जीवित किया गया। जिन्होने सर जॉन मार्शल को ए एस आई का प्रथम महानिर्देशक नियुक्त किया

समेकन और विस्तार :-

मार्शल ने नेतृत्व मे ए एस आई मे इस संगठन को पुनर्जीवित किया गया है।

पुरातत्वीय अध्ययन :-

प्रश्न-12 कालक्रम और डेटिंग कालक्रम के बारे में लिखिए।

उत्तर पुरातत्व विज्ञान कालक्रम या घटना -ओं के अनुक्रम को स्थापित करने के लिए दो मुख्य काल गणनाओं - सापेक्ष काल निर्धारण और निरपेक्ष (कालक्रमिक) काल निर्धारण - का उपयोग करता है। सापेक्ष - काल निर्धारण किसी वस्तु की आयु को अन्य वस्तुओं या परतों के संबंध में स्थापित करता है, जैसे की स्ट्रेटीग्राफी (मिट्टी की परतो का अध्ययन) के माध्यम से। निरपेक्ष काल निर्धारण, वैज्ञानिक तरीको का उपयोग करके एक विशिष्ट तिथी की आयु सीमा का निर्धारण करता है।

सापेक्ष डेटिंग :- यह विधि घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम से रखती है लेकिन कोई विशिष्ट तिथि नही बताती।

स्तरिकी :- यह सिद्धांत की

के मिट्टी और तलछट की नई परते पुरानी परतो के ऊपर पाई जाती है और घटनाओ का क्रम बनाए रखने मे मदद करती है।

क्रम :-

एक सापेक्ष काल-निर्धारण तकनीकी जो कूलाकृति और शैली गत समानताओ और समय के साथ परिवर्तन के आधार पर शृंखला व्यवस्थित करती है।

फ्लोरिन डेटिंग :- यह मिट्टीयो से हड्डियो द्वारा अवशोषित फ्लोरीन की मात्रा को मापता है।

निरपेक्ष (कोनोमेट्रिक) डेटिंग :-

ये तकनीके किसी कलाकृति या इवेन्ट को एक विशिष्ट तिथि या तिथियो द्वारा एक सटीक सीमा द्वारा प्रदान करता है

रेडियोकार्बन (कार्बन-14) डेटिंग :-

वृक्षावलय कालक्रम :-

Page
Date

(UNIT = IV)

प्रश्न-13 समसामयिक दृष्टिकोण पुरातत्व के बारे में लिखो।

उत्तर पुरातत्व के लिए एक समकालीन (२०वीं और २१वीं शताब्दी) में पुरातात्विक तरीकों को लागू करना और समकालीन दुनिया को समझने के लिए पुरातात्विक सोच का उपयोग करना शामिल है। यह हाल के दशकों के भौतिक साक्ष्यों – जैसे खंडहर कूड़ा-कचरा और शहरी परिदृश्य – पर केन्द्रित है। ताकि आधुनिकता वैश्वीकरण और मानव युग के बारे में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की जा सके। यह दृष्टिकोण पुरातत्व के सामाजिक-राजनीतिक आयामों से भी जुड़ता है। तथा विरासत को जोड़कर और आत्म सम्मान को बढ़ाकर रोजमर्रा के हित को जोड़ता है।

समकालीन दृष्टिकोण के प्रमुख पहलू

हाल की भौतिक संस्कृतियों पर ध्यान केन्द्रीत करें :–

पारंपरिक पुरातत्व के विपरीत यह क्षेत्र २० वी शताब्दी और २१ वी शताब्दी की हाल की भौतिक संस्कृति और कलाकृतियों का अध्ययन करता है।

पुरातात्विक विधियों का अनुप्रयोग :-

यह हाल की ऐतिहासिक घटनाओं और समकालीन स्थितियों का अध्ययन करने के लिए उत्खनन और विश्लेषण।

अंत-विषयक संवाद :-

समकालीन पुरातत्व वर्तमान की व्यापक समझ हासिल करने के लिए दर्शन, नृविज्ञान, इतिहास, भूगोल और शहरी नियोजन के साथ संवाद बढाना।

वर्तमान की भौतिकता :-

यह दृष्टिकोण आधुनिक युग की भौतिकता पर प्रकाश डालता है

पुरातात्विक विधियों का अनुप्रयोग :-

प्रश्न-15 नियतत्ववाद और सापेक्षवाद पुरातत्व के बारे में लिखें।

उत्तर पुरातत्व में नियतत्ववाद एक अवधारणा है, जो यह सुझाती है, की अतीत में मानव व्यवहार और सांस्कृतिक लक्षण पर्यावरण या आंतरिक सांस्कृतिक प्रणाली जैसे बहारी कारकों द्वारा पूर्वनिर्धारित थे। इसके विपरीत सापेक्षवाद इस बात पर जोर देता है कि सांस्कृतिक प्रथाएं और विश्वास केवल अपने सांस्कृतिक संदर्भ में ही समझ आते हैं जबकि नियतिवाद कठोर एकतरफा व्याख्या की ओर ले जाता है। सापेक्षवाद मानव अनुभवों की जटिलता और विविधता को पहचान कर अतीत के समाजों की सूक्ष्म समझ को प्रोत्साहित करता है, एक दृष्टिकोण जो अक्सर पोस्टप्रोसेसुअल पुरातत्व और सांस्कृतिक एजेंसी की अवधारणा से जुड़ा होता है

पुरातत्व में नियतिवाद

1. पर्यावरणीय नियतिवाद: उनका मानना है कि पर्यावरणीय कारक

Scanned with OKEN Scanner

सांस्कृतिक और सामाजिक विकास का प्राथमिक कारक है। उदाहरण के लिए किसी पुरातात्विक स्थल की व्याख्या केवल संसाधन उपलब्धता की प्रतिक्रिया के रूप में की जा सकती है।

2. सांस्कृतिक नियतिवाद :

यह इस बात पर केन्द्रित है कि किस प्रकार आन्तरिक सांस्कृतिक प्रणालियां सांस्कृतिक परिवर्तन को प्रेरित करती है जो प्रायः जैविक नियतिवाद के विरोध में प्रतीत होती है।

3. आलोचनाएँ :

नियतिवाद के दोनों रूप जटिल सामाजिक गतिशीलता को अति सरल बना सकते है तथा सरल कारण - और - प्रभाव संबंधों से परे मानवीय एजेंसी विकल्प और आन्तरिक कारकों के प्रभाव को ध्यान में रखने में विफल हो सकते है।

4. सांस्कृतिक सापेक्षवाद :

यह विचार कि किसी सांस्कृतिक के विश्वासों मूल्यों और प्रथाओं को उसके अपने विशिष्ट सांस्कृतिक ढाँचे के भीतर से समझा

और मूल्यांकन किया जाना चाहिए, न कि बाहरी मानकों के आधार पर।